प्रकाशन की तिथि 01.03.2025

ओ३म्

एक प्रति मूल्यः रू. 5.00

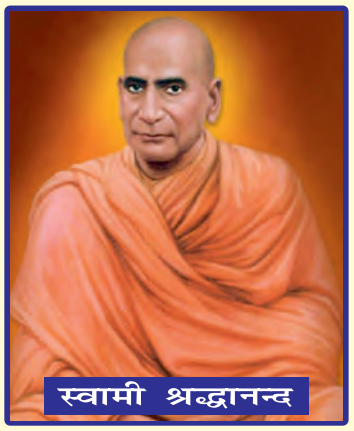

स्वामी श्रद्धानन्द

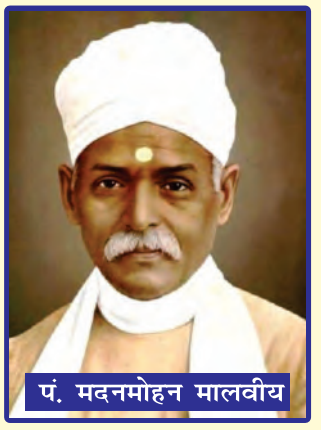

शुद्धि समाचार

सन् 1923 में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का मासिक मुखपत्र

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः। अथर्ववेद 12.1.12
भूमि मेरी माता है और मैं उस मातृभूमि का पुत्र हूँ।

पं. मदनमोहन मालवीय

वर्ष 49 अंक 03

''शुद्धि ही हिन्दू जाति का जीवन है''

वार्षिक शुल्क : 50 रुपये
आजीवन शुल्क : 500 रुपये

मार्च 2025 विक्रम सम्वत् 2081 फाल्गुन-चैत्र

सनातन धर्मी नेता- पं. मदनमोहन मालवीय

मोबाइलः 8368008215

परामर्शदाताः श्री हरबंस लाल कोहली श्री रणवीर सिंह श्री सुभाष चन्द्र दुआ श्री सुरेन्द्र गुप्त प्रबन्धकः श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा

इस्लाम अरब का धर्म, हम मुसलमान बनाए गए- नियाज खान IAS

नियाज खान प्रशासनिक अधिकारी होने के साथ ही एक लेखक भी हैं। उन्होंने अनेक पुस्तकें लिखी हैं, जिसमें 'ब्राह्मण द ग्रेट' और 'वॉर ऑफ कलयुग' मुख्य हैं। उन्होंने इस्लाम को लेकर कहा है कि इस्लाम अरब का मजहब है। भारत में तो सभी हिन्दू ही थे, जिन्हें बाद में मुस्लिम बना दिया गया। ऐसे में धर्म भले ही बदल गया हो, लेकिन हमारा लहू (खून) तो एक ही है।

मध्य प्रदेश सरकार के लोक निर्माण विभाग में उप सचिव के तौर पर कार्यरत अफसर नियाज खान कहते हैं कि एक समय था, जब हमारी एक ही संस्कृति थी। अरब के मुस्लिमों को आदर्श मानने वाले लोगों को फिर से अपनी सोच को बदलने की आवश्यकता है। ऐसे लोगों को सबसे पहले तो हिन्दुओं को अपना भाई मानना चाहिए, उसके बाद अरब को। नियाज खान ने दो दिन पहले ही अपने नए नॉवेल "Once I Was Black Man" का कवर फोटो शेयर किया था, जिसमें उन्होंने बताया कि अपने इस नॉवेल में उन्होंने श्वेतों से अश्वेतों के पीछे होने के कई कारणों का उल्लेख किया है। इसके अतिरिक्त नियाज खान 'ब्राह्मण द ग्रेट–2 भी मार्केट में आ चुकी है। लगभग सात माह पूर्व इसी पुस्तक में नियाज खान ने बॉलीवुड को सनातन धर्म का सबसे बड़ा शत्रु घोषित किया था। उन्होंने कहा कि ब्राम्हणों की सर्वोच्च सत्ता पर बात करते हुए बॉलीवुड को बंद करके कलाकारों का ब्राम्हणों से शुद्धिकरण कराया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त उन्होंने अंग्रेजी पहनावे के स्थान पर भारतीय वेश भूषा और गौमाता को सबसे अधिक महत्व देने की बात भी लिखी थी।

भारतीय हिंदू शुद्धि सभा के पूर्व प्रधान

हरबंस लाल कोहली दिवंगत

अत्यन्त दुःख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि भारतीय हिंदू शुद्धि सभा के मिशनरी, संरक्षक, पूर्व प्रधान एवं आर्य समाज, रामकृष्ण पुरम, सेक्टर – 9 के पूर्व प्रधान **श्रीमान हरबंस लाल कोहली जी** का दिनांक 25.02.2025 को सायं 4.30 बजे निधन हो गया। उनका अंत्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से 26.02.2025 को जोर बाग श्मशान घाट पर प्रातः11.30 पर सम्पन्न हुआ। स्व. श्री कोहली जी के प्रति शोक संवेदना सभा शनिवार दिनांक 01.03.2025 को आर्य समाज ग्रेटर कैलाश पार्ट–1, नई दिल्ली में अपराह्न 3.00 से 4.00 बजे तक हुई।

भारतीय हिंदू शुद्धि सभा की ओर से लोकप्रिय मार्गदर्शक श्रीमान कोहली साहब को अश्रुपूरित श्रद्धांजलि तथा सश्रद्ध नमन!

'शुद्धि' धारावाहिक-12

(वर्तमान परिवेश पर आधारित एक सशक्त एवं पठनीय उपन्यास)

(गत अंक से आगे) - लेखिका सुधा शर्मा

"मुस्लिम धर्म में कपड़ों की बहुत अच्छी व्यवस्था है। औरतें मुँह ढ़क कर चलती है सारा शरीर ढ़क कर चलती हैं और उनको कोई गलत नजर से नहीं देख सकता। यह तो तुझे मनाना पड़ेगा अखिल।"

"हॉं भाई! जब घर में ही गलत नजर से देखने वाले हो तो बाहर वालों की क्या जरूरत? मुस्लिम महिलाओं को घर के अंदर बिल्कुल सामान बना कर रखा जाता है। वस्तु समझा जाता है। भोग्या समझा जाता है। पुरुष सर्वेसर्वा है स्त्री की कोई भी औकात नहीं। जब तक चाहे उसका भोग करो और जैसे ही वह जरा सी भी गलती कर दे, अनजाने में उससे गलती हो जाए या कुछ भी

(शेष पृष्ठ 6 पर)

शुद्धि समाचार परिवार की ओर से सभी देशवासियों को नवसस्येष्टि, नवसंवत्सर एवं होली की हार्दिक शुभकामनाएं।

शुद्धि समाचार में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

मेरा दूसरा जन्म–इमरोज़ आलम

दोस्तों आज जब मैंने हरिद्वार में हर की पौड़ी पर डुबकी लगाई तो उसके बाद मेरी आंखों से आंसुओं का झरना रुकने का नाम नहीं ले रहा था पर भीगे हुए बदन में किसी को मेरे आंसू नहीं दिखे, मैं सोच रहा था एक दिन वो था जब मेरे सर से टोपी नहीं उतरती थी तबलीग़ जमातों में अल्लाहु–अल्लाहु करता फिरता था यानी जिन हिंदुओं मुश्किलों से कभी बेपनाह नफरत थी आज उन्हीं के जैसा हो गया, अगर ये लॉक डाउन न लगा होता और मुझे इस्लाम को सोचने समझने का मौका कभी न मिलता और मेरी सोच आज भी मैं वही कठमुल्ला वाली होती, और दोस्तों ये मेरा दूसरा जन्म है, एक वो जिसमें मुसलमान बन कर पैदा हुआ था और अब एक ये जिसमें हिंदु बनकर पैदा हुआ था, सो मैंने हरिद्वार के पवित्र धाम के दर्शन तो कर लिए आज मेरी प्रयागराज के लिए ट्रेन है, शाम 5 बजे तक टिकट कन्फर्म होगा, अगर नहीं हुआ तो दो चार दिन और यहीं गुज़र सकते हैं और लोग मुझसे बार–बार पूछ रहे हैं कि मैंने अपना नाम क्या रखा है, इस विषय पर मैं यही कहूंगा कि जब कोई हृदय का धनी सच्चा सनातनी मिलेगा और वो मुझे अपना गोत्र दान करने के साथ एक शुभ नाम देगा तभी मेरा नाम करण होगा, अभी मैं पूरा का पूरा प्रकृति पे निर्भर हूं, जैसा ईश्वर का लॉलीपॉप नहीं है जिसमें ये मुझे 72 हूरें चाहेगा मेरे साथ वैसा ही होगा और फिलहाल आप मेरा पुराना नाम होने से मुझे मुस्लिम मत समझिएगा, क्योंकि मैं दिल से तो सनातनी हो चुका हूं, बस कागज़ों की फॉर्मेलिटी रह गई है, वो भी एक दिन हो ही जाएगी, लेकिन मेरे आधारकार्ड से सरफराज़ अहमद की जगह कुछ और नाम आएगा पर मेरे लेखन कार्य का नाम इमरोज़ आलम है ये तो वही रहेगा एक्स–मुस्लिम इमरोज़ आलम ताकि मुसलमानों के दिल में हमेशा कांटे की तरह चुभता रहूं। खैर बहरहाल आप लोगों से एक अनुभव साझा करता हूं कि जब मैंने अपनी फेसबुक पर ये पोस्ट डाली कि मैं सत्य सनातन को स्वीकार करने जा रहा हूं तो मुसलमानों के दिल में जितनी आग लगी सो लगी पर हिन्दुओं ने भी मेरा विरोध किया, नहीं मुसलमान भी अच्छे होते हैं, तुम बस अपने कर्म सुधारो, मुझे हिन्दुओं की इस बात पर बड़ा ही तरस आया कि ये क़ौम कितनी मासूम है, सबको अपने ही जैसा सोचती है, अगर कोई हिंदु मुसलमान होने लगे तो दुनिया भर के सभी मुस्लिम उसकी बड़ी आओ भगत करेंगे, बस जन्नत के लालच में, इसलिए मुझे अपने किसी भी सनातनी भाई की बात का कोई बुरा नहीं लगा, क्योंकि उनके पास जन्नत दिलाएंगे, यहां मोक्ष ही स्वर्ग है, इसलिए मैं इस धर्म में बहुत ही सोच समझकर बिना किसी लालच के अपनी मर्ज़ी से आया हूं, अपना स्वागत समारोह कराने नहीं, हां बस एक लालच रहा है कि मुसलमान होने का ये गंदा धब्बा मेरी पहचान से हमेशा–हमेशा के लिए हट जाए और जो साले मुसलट ये कमेंट करते हैं कि मैं हिन्दुओं में दौलत शौहरत के लिए आ रहा हूं तो उनसे बता दूं कि हिंदु भी बेचारे बहुत–बहुत गरीब हैं, मुझे किसी से कुछ नहीं चाहिए, जो अपनी मर्ज़ी से कभी कुछ सपोर्ट करता है तो वो उसकी इच्छा, मैं किसी से दया नहीं चाहता, मुझे अपना काम करना है, जब कि सच तो ये है कि अब मेरा घर परिवार जो थोड़ा बहुत जुड़ा हुआ था, जिन्हें लगता था कि एक दिन अल्लाह मुझे राहे रास्त पे ले आएगा, मेरे इस कदम से उन सबकी उम्मीदें टूट गई हैं, और मेरे हिस्से में जो भी तीस चालीस पचास लाख की प्रॉपर्टी आती उस सब पे अब मेरा बाल बराबर भी अधिकार नहीं रहा, लेकिन ये सब खोकर मैंने जो पाया है उसका हिसाब किताब हीरे मोतियों से भी ऊपर है।

एक्समुस्किम इमरोज़ आलम
E-mail: imanwalakafir@gmail.com

लव जिहाद के जाल में फसी बच्ची के बाप ने कहा– आप गुरू और भगवान है

कल एक लव जिहाद का केस गौरव कुमार झा के पास गुजरात से आया, यदुवंशी परिवार की एक बच्ची है वो डिजीटल भारत के आधुनिकता को पहचान नही सकी थी और फस गई एक जिहादी के प्रेम जाल मे और अब क्या था खेल शुरु जिहाद का और बच्ची जिहादी के साथ निकल गई, परिवार मे अफरा तफरी मची हुई थी लडकी के पिता का बुरा हाल था, कल 3.30बजे के आस पास बिहार के आनंद पाठक जी के द्वारा कान्फ्रेंस पे गुजरात के सुरेश यादव जी से इनकी बात करवाई गई सुरेश जी ने घटना से अवगत करवाया ,फिर क्या था हिन्दु समाज की बेटी है तो सुध लेना पड़ा फिर लड़की के पिता से जानकारी इकट्ठा कर लग गए अपने काम मे गोवा, कर्नाटक, महाराष्ट्र के लगे बॉर्डर के समीप एक गांव मे बच्ची होने की जानकरी बताई गई। शिवाजी पाटील जी को इस मामले की जानकारी दी गई और रात्रि में बच्ची को पिता से मिलवा दिया गया और बच्ची अब अपने पिता के साथ घर जा रही है। पिता के आवाज और चेहरे पे एक अलग तेज देखने को मिला बिते कुछ घंटो के भाती बच्ची के पिता ने एक शब्द कहा वार्तालाप के दौरन आप गुरू और भगवान है जब भी गुजरात आईए हमारे घर पे रुकीयेगा हमे गुरू भगवान का सेवा करना है। मेरा ऊनसे बस एक शब्द कहना हुआ अगर सेवा करना है तो आपलोग एकत्रीत रहिये हम हिन्दु अभी बहुत बुरे दौर से गुजर रहे हम भारत के हिन्दु गजवा–ए–हिन्द का सपना पाले जिहादीयो के बीच में रह रहे है इस लिए अपने घर से सुरू करते हुए अपने मुहल्ले, अपने समाज के हिन्दुओ को जिहाद के बारे मे बताईये चाहे वो लव जिहाद हो, भुमी जिहाद हो, रोजगार जिहाद हो या फिर जिहादीयो का अलताकिया जिहाद हो। बच्ची के पिता ने वचन दिया है वो अभी से इन विषयो पे चर्चा करते रहेंगे और जागृती फैलाते रहेंगे।

दिल से साधुवाद उन हर हिन्दु वीरो का जिनके अथक प्रयास से आज एक आधुनिकता के दौर की नादान बच्ची अपने पिता से मिल सकी।। सत्य सनातन वैदिक धर्म की जय

सुविचार- संसार में दु:ख का कारण ईश्वर नहीं अपितु मनुष्य स्वयं है। ईश्वर ने तो मनुष्य के निर्माण के साथ ही उसे वेद रूपी उपदेश में यह बता दिया कि उसे क्या करना है और क्या नहीं करना है? अर्थात मनुष्य को सत्य-असत्य का बोध करवा दिया था। अब यह मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वो सत्य मार्ग का वरण करे और असत्य मार्ग का त्याग करें। पर यदि मनुष्य अपनी अज्ञानता से असत्य मार्ग का वरण करता है तो आध्यात्मिक, आधिभौतिक एवं आधिदैविक तीनों प्रकार के दु:खों का भागी बनता है। अपने सामर्थ्य के अनुसार कर्म करने में मनुष्य स्वतन्त्र है। यह निश्चित सिध्दांत है मगर उसके कर्मों का यथायोग्य फल मिलना भी उसी प्रकार से निश्चित सिध्दांत है।

1. चार से विवाद मत करो! मूर्ख, पागल, गुरु और माता पिता!
2. चार दुर्लभ गुण! धन के साथ पवित्रता, दान के साथ विनय, वीरता के साथ दया और अधिकार के साथ सेवाभाव!
3. चार में शर्म नहीं करनी चाहिए! पुराने कपड़ो में, ग़रीब साथियों में, बूढ़े माता पिता में और सादे रहन-सहन में!
4. चार से चार भाग जाते है! विद्या अध्यन से अज्ञान, वेद शास्त्र से पाखंड, जागते रहने से चोर और मौन रहने से क्रोध!

स्वामी दयानंद का घर वापसी (शुद्धि) अभियान!

❑ लेखक आर्य सागर तिलपता ग्रेटर नोएडा

आर्य समाज के संस्थापक , आद्य आचार्य स्वामी दयानंद सरस्वती स्वराज , स्वसंस्कृति, स्वदेशी, स्वधर्म स्वभाषा के उपासक व प्रचारक थे। उनके प्रखर राष्ट्रवादी विचारों से भारतीय स्वाधीनता संग्राम को नई ऊर्जा व प्रेरणा मिली। सामाजिक धार्मिक सुधारक होने के नाते उन्होंने सुधार के व्यापक विविध कार्यों को हाथ में लिया चाहे दलित उद्धार हो या स्त्री शिक्षा हो, गौ रक्षा हो,हिंदी भाषा हो या गुरुकुल शिक्षा पद्धति दयानंद के चिंतन दर्शन कार्यक्षेत्र में यह सभी महत्वपूर्ण रहे लेकिन एक और महत्वपूर्ण कार्य उन्होंने अपने हाथ में लिया वह था मुगलकाल व पश्चात में अंग्रेजी शासन जो ईसाई मत का पोषक था पक्षपाती था में बलात तलवार के बल, छद्म सेवा अन्य प्रलोभन से हिन्दू से मुसलमान व ईसाई बने व्यक्तियों की एकल व सामुहिक स्तर पर हिन्दू धर्म में घर वापसी अर्थात शुद्धि। महर्षि दयानंद ने अपने सार्वजनिक व्याख्यानों में यह घोषणा की आर्य धर्म अर्थात हिंदू धर्म प्रचारक धर्म है। हमारे पूर्वजों ऋषि मुनियों ने देश– देशांतर, दीप –दीपांतर में जाकर वैदिक सभ्यता संस्कृति का प्रचार किया उपदेश के माध्यम से लोगों को वैदिक धर्मी बनाया लेकिन अहो! दुर्गभाग्य आज हमारा आज आचार्य भूमि भारत में ऋषियों, राम –कृष्ण की संतानों को धर्म भ्रष्ट किया जा रहा है।

महर्षि दयानंद की मान्यता थी कि प्राचीन आर्य धर्म की पाचन शक्ति विभिन्न मतों को अपने में मिलाने आत्मसात करने में सभ्यता के आदिकाल से ही बड़ी प्रबल रही है। शक, हूण, आभीर जैसी विदेशी जातियों को इसने अपने अंदर आत्मसात कर उन्हें वैदिक धर्म में दीक्षित कर दिया लेकिन मध्यकाल में जो वैचारिक जड़ता हिंदू धर्म में आई उसके कारण विशाल भारत रुपी आर्य धर्म या हिंदू परिवार में नए सदस्यों का आगमन तो दूर हिंदुओं की संतति ही ईसाई मुसलमान तेजी से बन रही है।

दूरदर्शी महर्षि दयानंद ने इस सब का कारण मुस्लिम शासन से आयी विकृति अस्पृश्यता, अशिक्षा व लंबे पराधीनता के काल के कारण हिंदुओं में आई आत्महीनता, आत्म गौरव व अपनी संस्कृति के प्रति उपेक्षा का भाव व समुद्री यात्रा करने से धर्म भ्रष्ट होने जैसी अतार्किक रुढी प्रचलित अन्य आडंबरों को माना। अंग्रेजी राज्य के संरक्षण में ईसाई मिशनरियों अंग्रेजों के पंच मकार जिन्हें कहा जाता है जिसमें मर्चेंट मिलिट्री, मिशनरी, मैकाले तथा मैक्स मूलर शामिल था के द्वारा भोली भाली हिंदू जनता को ईसाई बनाने को लेकर महर्षि दयानंद बेहद चिंतित थे।

उनकी इस पीड़ा का बोध हमें उनके जीवन विषय क एक घटना से मिलता है जो इस प्रकार है–

एक रात्रि को महर्षि दयानंद सहसा उठकर इधर–उधर टहलने लगें। उनके पांव की आहट सुनकर एक सेवक की भी आंखें खुल गई। उसने पूछा महाराज क्या कोई कष्ट है। स्वामी जी ने एक लंबी श्वास खींची और बोले कि ईसाई लोग दलितों को ईसाई बनाने का भरसक प्रयत्न कर रहे हैं और रुपया पानी की तरह बहा रहे हैं। इधर हिंदुओं के धर्म नेता है जो कुंभकरण की नींद सो रहे हैं। यही चिंता मुझे विकल कर रही है।

महर्षि दयानंद द्वारा धर्मांतरण की रोकथाम के लिए तत्कालीन काशी लाहौर की पंडित मंडली से पत्र–व्यवहार संवाद हुआ लेकिन महर्षि दयानंद को अपने मंतव्य में सफलता नहीं मिली। हिंदुओं के धार्मिक नेता मठाधीश शंकराचार्य इस विषय पर उदासीन थे।

महर्षि दयानंद ने हिंदुओं में धर्मांतरण के रोग को भांपकर इसकी रामबाण चिकित्सा ढूंढ निकाली। स्वामी दयानंद ने कहा– सुबह का भुला यदि शाम को घर वापस लौट आए तो उसे भूला नहीं कहते। महर्षि दयानंद ने मनुस्मृति, गौतम धर्म सूत्र ,आपस्तम्ब धर्म सूत्र जैसे प्राचीन धर्म सूत्रों स्मृति से यह व्यवस्था निकाली कि यदि कोई व्यक्ति आचार विचार से पतित हो जाए और कालांतर में उसमें आत्मसुधार प्रबल प्रायश्चित भाव जागृत हो जाए तो वह व्यक्ति स्वतरू ही शुद्ध हो जाता है फिर यह तो हमारे भूले बिछड़े भाई थे जिन्हें भय तलवार के बल पर मुसलमान बनाया गया है ऐसे में आगे एक कदम बढ़कर इनको गले लगाना चाहिए अब और देर नहीं करनी चाहिए।

आदित्य ब्रह्मचारी सुधार के इस समर भूमि में अकेले ही कूद पड़े प्रचंड पुरुषार्थी कर्मयोगी दयानंद ने 19 वीं शताब्दी में अपने आप में अनोखे सर्वाधिक व्यापक घर वापसी अभियान शुद्धि अभियान का सूत्रपात कर दिया ।

इस अभियान में उन्होंने देहरादून के जन्म से मुसलमान मोहम्मद उमर को स्वयं अपने हाथों से शुद्ध किया और उसे नया नाम 'अलखधारी' दिया जिन्होंने कालांतर में वैदिक हिंदू धर्म की बहुत सेवा की अलखधारी जी ने सैकड़ो अपने जैसे जन्म से मुसलमानों की हिंदू धर्म में घर वापसी कराई।

काशी की विद्वत पौराणिक मंडली ने भी महर्षि दयानंद के इस कार्य की भूरि भूरि प्रशंसा की। बिहार भागलपुर में एक दिन 30– 40 यूरोपियन व हिंदुस्तानी पादरी स्वामी दयानंद से मिलने आये। स्वामी जी धारा प्रवाह संस्कृत में उनसे बोलते रहे और उन्हें यथासंभव समझाते भी रहे स्वामी जी के उपदेश को सुनकर एक ईसाई पादरी जो पहले बंगाली ब्राह्मण था बहुत रोने लगा और उसने स्वामी जी से कहा यदि आप जैसे तार्किक धर्म धुरंधर तेजस्वी देशभक्त पंडित मुझको पहले मिल जाते तो मैं ईसाई न होता स्वामी जी ने कहा आप चिंतित क्यों होते हैं मैं आज तो आपको मिल गया। वह इसाई बना बंगाली ब्राह्मण उसी दिन हिंदू बन गया। स्वामी जी ने उसे अपने हाथों से यज्ञोपवीत पहनाया व गायत्री की दीक्षा दी।

अमृतसर के मिशन स्कूल के पंडित खड़क सिंह जो 12 वर्ष पहले ईसाई हो गए थे अमृतसर में स्वामी जी का वेदों पर व्याख्यान सुनकर व उनके बुद्धिवाद अपूर्व तर्कों से प्रभावित होकर तत्काल घर वापसी करते हुए हिंदू बन गए और अपनी दो बेटियों का विवाह उन्होंने हिंदुओं में किया और आजीवन आर्य समाज के उपदेश के रूप में पंजाब में दलित उद्धार के क्षेत्र में बहुत उत्तम कार्य किया।

एक बार प्रयागराज में स्वामी दयानंद ठहरे हुए थे। वहां अनेकों व्यक्तियों हिंदू धर्म छोड़कर ईसाई मत अपनाने को उद्यत हो गए जब स्वामी दयानंद को यह पता चला तो स्वामी जी उनकोउपदेश दिया उपदेश को सुनकर ईसाई बनने को तैयार उन युवकों का सारा उत्साह ठंडा पड़ गया और हिंदू धर्म में उनकी आस्था निष्ठा बलवती हो गई। अमृतसर में ही लगभग 40 हिंदू नवयुवकों के विचार मिशन स्कूल में ईसाई मत की शिक्षा पाने और ईसाइयों के संपर्क में रहने से ईसाई मत की ओर झुक गए थे वह नाम मात्र के हिंदू रह गए थे और हृदय से ईसाइयों हो गये थे यहां तक कि वह अपने को बपतिस्मा ना पाए हुए ईसाई कहने लगे थे और अपनी एक सभा अलग उन्होंने बना ली थी जिसका नाम उन्होंने 'प्रेयर मीटिंग' रखा था प्रति रविवार उसका अधिवेशन हुआ करता था जब उन्होंने महर्षि दयानंद के उपदेश सुने और वैदिक धर्म की सच्चाइयां और ईसाई मत के भ्रममूलक सिद्धांत उन पर प्रकट हुए तो ईसाई होने से बच गए।

स्वामी दयानंद के घर वापसी अभियान को लेकर ऐसी एक नहीं असंख्य घटनाएं हैं यहां इस लेख के विस्तार भय से उन सभी को उद्धृत नहीं किया जा रहा। अविभाजित पंजाब से लेकर संयुक्त प्रांत, बिहार ,बंगाल में स्वामी जी के घर वापसी अभियान की धूम मच गयी। स्वामी जी यह समझ गए थे की सुधार ऊपर से चलता है तथा राजा तथा प्रजा मुसलमान व ईसाई शासको ने अपनी शासित प्रजा को अपने मत में मिलाने के लिए जो प्रयास किया है ऐसा ही प्रयास देसी रियासतों के राजाओं को भी करना चाहिए । आर्य अर्थात हिंदू धर्म के प्रचार में देशी राजाओं को उदासीन प्रवृत्ति का त्याग कर देना चाहिए अपने पूर्वजों से प्रेरणा लेनी चाहिए। स्वामी जी ने राजपूताने की मेवाड़ उदयपुर शाहपुरा जोधपुर आदि रियासतों के राजाओं प्रतिनिधियों को पत्र लिखकर कहा कि इन राज परिवारों में राजकुमारों के शिक्षक मुसलमान व इसाई नहीं होने चाहिए यदि ऐसा होता है तो राजकुमार भी धर्म भ्रष्ट हो सकते हैं। स्वयं मत के त्याग की प्रवृत्ति उनमें जन्म ले सकती है। राजकुमारों की शिक्षा दीक्षा के लिए संस्कृत वेद उपनिषद दर्शनों के पंडितों की व्यवस्था होनी चाहिए जिससे कोई उन्हें अपने मत में बहाकर शामिल न कर सके। रियासतों में बिना भेदभाव सभी के लिए चाहे राजा हो या रंक की संतान सभी के लिए पाठशालाएं खुलनी चाहिए प्राचीन व आधुनिक कला कौशल विज्ञान के विद्यालय भी खुलने चाहिए। राजपूताने के देशी राजाओं के साथ राष्ट्रभक्ति, राजधर्म पर हुआ स्वामी दयानंद का यह पत्र व्यवहार आज भी सुरक्षित है। महर्षि दयानन्द का पत्र –व्यवहार पुस्तक के नाम से उपलब्ध है। देव दुर्भाग्य से से 59 वर्ष की आयु में ही तत्कालीन राजनीतिक षडयंत्रों के कारण जिसमें महर्षि दयानंद के घर वापसी अभियान की विरोधी व उससे घबराई हुई शक्तियां भी शामिल थी के द्वारा जोधपुर प्रवास के दौरान दुग्ध में जहर दिए जाने के कारण महर्षि दयानंद का अक्टूबर 1883 में अजमेर में बलिदान हो गया।

– शेष अगले अंक में

वैदिक सत्य सनातन नववर्ष, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा विक्रमी

संवत 2082, मंगलवार (29 मार्च, 2025) की आप सभी को सपरिवार बहुत बहुत हार्दिक शुभकामनाएं। आप सपरिवार सदा सुखी स्वस्थ और समृद्ध जीवन के साथ शतायु हों और सभी के प्रिय बन कर रहें।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का ऐतिहासिक महत्वः—(1) इसी दिन आज से 1,97,29,49,127 वर्ष पूर्व ईश्वर ने सृष्टि की रचना प्रारंभ की थी(सृष्टि संवत,) **(2)** इसी दिन आज से 1,96,08,53,127, वर्ष पूर्व इस सृष्टि काल के प्रथम युवा मनुष्यों के जोड़ों ने जन्म लिया था (मानव संवत,) **(3)** मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचंद्र का राज्याभिषेक भी इसी दिन हुआ था! **(4)** महाराज युधिष्ठिर का राज्यभिषेक 5162 वर्ष पूर्व इसी दिन हुआ था! **(5)** 2082 वर्ष पूर्व सम्राट विक्रमादित्य ने इसी दिन अपना राज्य स्थापित किया उसी दिन से प्रसिद्ध विक्रमी संवत प्रारंभ हुआ! **(6)** 150 वर्ष पूर्व स्वामी महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने इसी दिन को आर्य समाज की स्थापना दिवस के रूप में चुना, आर्य समाज वेद प्रचार का महान कार्य करने वाला एकमात्र संगठन है! **(7)** विक्रमादित्य की भांति शालिवाहन ने हूणों को परास्त कर दक्षिण भारत में श्रेष्ठतम राज्य स्थापित करने हेतु यही दिन चुना! **(8)** राष्ट्रीय स्वयंसेवक के संस्थापक डॉ. केशवराव बलिराम हेड गेवार जी का जन्म भी 136 वर्ष पूर्व इसी दिन हुआ था!

वैदिक सत्य सनातन नववर्ष का प्राकृतिक महत्वः— (1) बसंत ऋतु का आरंभ वर्ष प्रतिपदा से ही होता है जो उल्लास उमंग खुशी तथा चारों तरफ पुष्पों की सुगंधि से भरी होती है! **(2)** फसल पकने का प्रारंभ यानि किसान की मेहनत का फल मिलने का भी यही समय होता है।

होलकोत्सव सनातन संस्कृति का महापर्व

होली सनातन भारतीय संस्कृति के चार प्रमुख पर्वों (नवसंवत्सर, श्रावणी पर्व, दीपावली तथा होली) में से एक है। ऋतु संधि पर जलवायु परिवर्तन के कारण व्यक्ति के रोग ग्रसित होने तथा समाज में महामारी फैलने की संभावना रहती है। ऋतुओं के संधिकाल (पर्व) को समाज के स्वास्थ्य संवर्धन उत्सव के रूप में मनाने हेतु हमारे ऋषि-मुनियो सामुहिक यज्ञ-हवन की व्यवस्था दी, होली मनाने का यही हेत है। होली नई फसल (गेहूँ, जौ, चना आदि) पर किया जाने वाला **नवसस्येष्टि** (नव-नई, सस्य-फसल, इष्टि-यज्ञ) है। अधभुने अन्न के दानों को संस्कृत में होलक तथा हिन्दी में होला कहते हैं

अर्द्धपक्वशमीधान्यैस्तृणभ्रष्टैश्च होलकः। होलकोऽल्पानिलो मेदः कफदोषश्रमापहः॥ भाषाप्रकाश ॥

अर्थात तिनकों की अग्नि में भुने हुए अधपके शमी धान्य (फली वाले अन्न) को होलक कहते हैं जो वात जनित रोग, बढ़ी हुई चर्बी, कफ तथा शारीरिक थकान को दूर करता है। इस प्रकार भाषा शुद्धि की दृष्टि से इसे 'होलिकोत्सव' के स्थान पर 'होलकोत्सव' कहना अधिक उत्तम है।

होलकोत्सव सामाजिक समरसता का पर्व है। एक दूसरे से गले मिलते हुए गुलाबजल आदि सुगन्धित द्रव्यों का अदान-प्रदान कर मधुर सामाजिक स्नेह के परिचायक इस पर्व पर गुलाल तथा रासायनिक रंग एवं कीचड़ उछालने की विकृति उत्पन्न हो गई। ऋतु परिवर्तन पर रोगों से बचने हेतु सामुहिक यज्ञ-हवन के अतिरिक्त मौसमी ज्वर से बचने हेतु टेसू के फूलों का रस (रंग) छिड़कना ओषधि रूप था। प्रसन्न होकर एक दूसरे का आलिंगन तथा संगीत सम्मेलन का विकृत रूप आज का होली का हुड़दंग है। कवि ने उचित ही कहा है

हवनावली महोत्सव का, रखा है होली नाम।
हवन-यज्ञ के बदले जिसमें, करते उल्टे काम॥

छान्दोग्योपनिषद् में कहा है-**'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म'**- तथा शतपथ ब्राह्मण कहता है-**'यज्ञो वै विष्णु'** अर्थात् सभी कार्यों में सर्वश्रेष्ठ कार्य यज्ञ है तथा यज्ञ इस संसार का पालक (विष्णु) है। होलकोत्सव भैषज यज्ञ है। **भैषज्ययज्ञा वा एते। ऋतुसन्धिषु व्याधिर्जायते॥ तस्मात्तु सन्धिषु प्रयुज्यते॥** अर्थात् ऋतु संधि पर होने वाली व्याधियों से निवृत्ति हेतु भैषज यज्ञ करने की हमारी परिपाटी रही है। यज्ञ से जड़ (पृथ्वी, जल, वायु, तेज और आकाश) तथा चेतन (माता-पिता, आचार्य, विद्वान्) सभी देवता प्रसन्न और तुष्ट होते हैं

देवान्भावयानेन ते देवा भावयन्तु वः। परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ। गीता ३/११

'देवताओं को यज्ञ से तुष्ट करो देवता तुम्हें तुष्ट करेंगे इस प्रकार परस्पर एक दूसरे की पूजा और सम्मान करते हुए श्रेष्ठता को प्राप्त करो।

आधुनिक काल में महर्षि दयानन्द ने यज्ञ-हवन के शुद्ध वैज्ञानिक, पर्यावरण सम्पोषक, रोगनिवारक तथा समाजोन्नति पोषक स्वरूप को पुनः प्रतिष्ठित किया है। दैनिक पंचमहायज्ञ तथा पर्वो पर वृहद सामुहिक यज्ञ-हवन के द्वारा हम नये-नये नामों के साथ उभरने वाले शारीरिक और मानसिक रोगों का शमन कर सकेंगे।

आत्मा में आनन्द हो, चेतन ओम् भगवान से, विश्व के मानवों में मैत्री हो, वेद के ज्ञान से
पर्यावरण की शुद्धि हो, यज्ञ के विज्ञान से, समाज में शान्ति हो, संस्कारी संतान से
जीवन सार्थक हो, राष्ट्रहित बलिदान से

प्रकृति सम्मत पूर्णतः वैज्ञानिक भारतीय सम्वत्

भारतीय कालगणना में महिनों के नामकरण ब्रह्माण्ड में स्थित नक्षत्रों पर आधारित हैं। चित्रा नक्षत्र वाली पूर्णिमा के मास का नाम चौत्र है, विशाखा का वैशाख है, ज्येष्ठा का ज्येष्ठ है, श्रवण का श्रावण है, उत्तराभद्रपद का भाद्रपद है, अश्विनी का अश्विन है, कृतिका का कार्तिक है, मृगशिरा का मार्गशीर्ष, पुष्य का पौष, मघा का माघ और उत्तरा फाल्गुनी का फाल्गुन मास होता है। एक वर्ष ३६५ दिन ६ घंटे ६ मिनट ११ सैकण्ड का होता है। हमारे वैज्ञानिकों ने २ वर्ष ८ मास १६ दिवस के उपरान्त एक अधिक मास या पुरुषोत्तम अथवा मलमास की व्यवस्था करके कालगणना की प्राकृतिक शुद्धता और वैज्ञानिकता को विद्यमान रखा। सूर्य और चन्द्र की गतियों में अन्तर होता है किन्तु ऋतुएँ दोनों से प्रभावित होती हैं। सौर एवं चन्द्र गति का सामंजस्य रखने से ऋतुओं का महिनों से तथा वर्ष से तालमेल रखा गया है। मकर संक्रांति के उत्सव की गणना सूर्य मास से होती है तथा बारह राशियों में से जब सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है तो यह मकर संक्रमण कहलाता है तथा इस समय से रात्रि छोटी और दिन बड़े होने आरम्भ होते हैं।

इन विशेषताओं को देखते हुए उचित होगा कि हम सभी भारतवासी पूर्णतः वैज्ञानिकता और प्रकृति से साम्य रखने वाली अपनी युगों पुरानी वैज्ञानिक एवं वैश्विक भारतीय कालगणना का प्रयोग करें। इस कालगणना का प्रथम दिवस चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, श्री ब्रह्माजी द्वारा सृष्टि रचना का दिवस है। वर्ष प्रतिपदा केवल भारतवासियों के ही नहीं अपितु सम्पूर्ण सृष्टि के लिए वैज्ञानिक आधार पर मान्य है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के साथ भारतीय परिवेश की कुछ ऐसी विशेष घटनाएं संबंधित है जिनके कारण इसका महत्त्व और भी अधिक बढ़ जाता है। प्रभु श्रीरामचन्द्र का राज्याभिषेक, धर्मराज युधिष्ठिर का राजतिलक, विक्रमादित्य के विक्रम सम्वत् का शुभारम्भ, सम्राट शालिवाहन द्वारा आरम्भ शक सम्वत् स्वामी दयानन्द द्वारा आर्यसमाज की स्थापना और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के निर्माता डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार का जन्मदिन। यद्यपि भारत में अनेक सम्वत् चलते हैं किन्तु सबका प्रथम दिन चैत्र शुक्ल प्रतिपदा ही है क्योंकि सभी भारतीय संवतों की मूल गणना पद्धति समान तथा पूर्णतः वैज्ञानिक है। हम भारतीय अपनी कालगणना को भूलकर कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा, भनुमति ने कुनबा जोड़ा के नमूने पर बने ईस्वी सन् के नववर्ष के पीछे भाग रहे हैं, यह पूर्णतः अवैज्ञानिक और अव्यावहारिक है। विदेशी साम्राज्य के प्रभावकाल में ईसाई कालगणना हम पर थोपी गई थी। उस समय की मानसिक दासता के कारण हम ईसाई वर्ष को मनाते चले आ रहे हैं। यह हमारे लिए लज्जा का विषय है। आइये हम इसका परित्याग कर अपना भारतीय नववर्ष हर्षोल्लास से मनायें। यह भी ध्यान रखें कि पश्चात्य नववर्ष के आगमन का स्वागत भद्दे नाच-गान, उच्छृंखलता, रात-रात भर होटलों में शराब के नशे में मौज-मस्ती इत्यादि के साथ होता है। परन्तु भारतीय नववर्ष का स्वागत प्रातःकाल हवन, मन्दिरों पर नव ध्वजारोहण, नये यज्ञोपवीत धारण करने, नवरात्र पूजन, देवी पूजन और नवसंकल्प इत्यादि के साथ होता है और यह अर्द्धरात्रि से नहीं अपितु सूर्योदय से आरम्भ होता है। उगते सूर्य का प्रकाश शुभ संकेत देता है ऐसे में अपने इष्ट की पूजा-अर्चना के बाद बिना मादक पदार्थों के पूरी चेतना तथा सात्त्विकता के साथ नववर्ष शुभ संकल्पों के साथ मनाया जाना युक्ति संगत है।

सभी पाठक वृंद को नवसंवत्सर तथा होलिका की हार्दिक शुभकामनाएँ॥

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा–नवीन कार्यकारिणी की संशोधित सूची

दिनांक 19.01.2025 के सन्दर्भ में

संरक्षक

1. **महाशय राजीव गुलाटी जी**
   9/44, कीर्ति नगर, इन्डस्ट्रीयल ऐरिया, नई दिल्ली–110015
2. **ठा. विक्रम सिंह जी,**
   ए–41, लाजपत नगर–2, तीसरी मंजिल, नई दिल्ली–110024
3. **श्री हरबंस लाल कोहली जी,**
   म.न. 26, सैक्टर–27, गॉल्फ कोर्स रोड, गुरुग्राम–122009, हरियाणा, मो.9818200951
4. **श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा जी,**
   ई–187, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली–110060 मो. 9873354458
5. **श्रीमती ललिता निझावन जी,**
   ए–1/1, वसन्त विहार, नई दिल्ली–110056 मो. 9811889355
6. **श्री राजेन्द्र प्रकाश दुर्गा जी,**
   म.न. 74, साक्षर अपार्टमेन्ट, पश्चिम विहार, नई दिल्ली–110063, मो. 9818087360
7. **डॉ. पूर्ण सिंह डवास जी,**
   एम–93, साकेत, नई दिल्ली–110017 मो. 9818211771

प्रधान

1. **स्वामी सच्चिदानन्द जी,**
   ज्ञान ज्योति गुरुकुलम्, रिवाला धाम, मलपुरा, कोटपुतली–राजस्थान मो. 9837643458

कार्यकारी प्रधान–

1. **श्री रणवीर सिंह जी,**
   G–79, नारायणा विहार, नई दिल्ली–28 मो. 9818281981

महामन्त्री

1. **श्री सुभाष चन्द्र दुआ जी,**
   ग्रीन वुड सिटी, सैक्टर 46 गुरुग्राम, मो. 810829409

उपप्रधान–

1. **श्री विजय कुमार बत्रा जी,**
   S–133, पंचशील पार्क, नई दिल्ली–110017 मो. न. 9899822992
2. **श्री एस.के. कोचर जी,**
   रोड न. 4, हाउस न. 16, ईस्ट पंजाबी बाग, नई दिल्ली–26, मो. 9313260122
3. **श्री विजय कपूर जी,**
   जे–13 बी, कैलाश कॉलोनी,नई दिल्ली–110048 मो. 9810155265
4. **श्रीमती सुमन चाँदना जी,**
   आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली–60, मो. 9891477300

मन्त्री

1. **श्री जितेन्द्र भाटिया जी,**
   A–22, आर्य नगर कॉपरेटिव सोसाइटी इटी, पटपड़गंज, दिल्ली–110092 मो. 110092, मो. 9911160975
2. **श्री ईश कुमार नारंग जी,**
   207, फस्ट फलोर, दयानन्द विहार, दिल्ली–9911160975
3. **श्री ओम प्रकाश 'यजुर्वेदी' जी**
   म.न. 338, मगरा मोहल्ला असोला, फतेहपुर बेरी, नई दिल्ली–110074 मो. 9968264375

कोष प्रभारी

1. **श्री सुरेन्द्र कुमार गुप्ता जी,**
   K–146, गली नम्बर 9, सोम बाजार रोड, राजापुरी, नई दिल्ली–110059 मो. 9968634685

अन्तरंग सदस्य

1. **श्री सूर्य पाल सिंह जी,**
   54–सूर्योदय अपार्टमेन्ट, सैक्टर–12 पॉकेट–08, द्वारिका, नई दिल्ली–110075 मो. 9999176667
2. **श्रीमती संतोष वधवा जी,**
   ई–181, नारायणा विहार, नई दिल्ली–110028 मो. 9868616260
3. **श्री ओमवीर सिंह जी,**
   272 बी,विपिन गार्डन, उत्तम नगर, नई दिल्ली–110059, मो. 9868803585
4. **श्री करण सिंह तंवर जी मन्त्री,**
   CB–81, नारायणा गांव, नई दिल्ली–110028 मो. 8860703535
5. **श्री सुभाष चांदना जी,**
   ए–181, दूसरी मंजिल, शिवालिक, नई दिल्ली–110017, मो. 9811544581
6. **श्री के.एल. राणा जी**
   780, विकास कुंज, विकासपुरी नई दिल्ली–110018, मो. 8368823178
7. **श्री शशिकान्त जी,**
   80, नीलगिरि अपार्टमेन्ट, अलखनन्दा, नई दिल्ली–110019, मो.–9871531698
8. **श्री सुरेन्द्र आर्य जी,**
   डी–122, पॉकेट–11, सैक्टर–08, रोहिणी, दिल्ली–110085, मो. 9811476663
9. **श्री एस.सी. सक्सेना जी,**
   E–84, ग्रेटर कैलाश, पार्ट–1, नई दिल्ली–110048, मो. 9811590120
10. **आचार्य श्याम लाल जी,**
    A–162, छतरपुर एन्क्लेव, फेज–2, रोड न. 26, नई दिल्ली–110024 मो. 9811639930
11. **श्री अतुल अरोड़ा जी,**
    E–123, वी.के. दत्त कॉलोनी, लोधी रोड, नई दिल्ली–110003, मो. 9953498233
12. **श्री सत्यव्रत चौधरी जी,**
    BK–68, शालीमार बाग, पश्चिमी दिल्ली–110088, मो. 8384004190
13. **श्री स्वदेश पाल गुप्ता जी,**
    आई–53, लाजपत नगर–1, नई दिल्ली–110024, मो. 9718599990
14. **श्री नरेश कुमार वर्मा जी,**
    WZ–250, इन्द्रपुरी, नई दिल्ली–110012 मो. 9968302342
15. **श्रीमती सुजाता रहेजा जी,**
    B–21, नारायणा विहार, नई दिल्ली–110028
16. **श्रीमती गीता झा जी,**
    G–71, गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली–110049 मो. न. 9811027219
17. **आचार्य करण सिंह जी,**
    बी–43, सैक्टर 47, नोएडा, गौतम बुद्ध नगर–201203, उत्तर प्रदेश मो. 9899558589
18. **CA श्री दीपक गुप्ता जी**
    E–19, नारायणा विहार, नई दिल्ली–110028 मो. 9999230044
19. **श्री अजय चौधरी जी,**
    G–49, विकासपुरी, नई दिल्ली–110018 मो. 9818522142
20. **श्री अजय अग्रवाल जी,**
    2/71, रूप नगर, दिल्ली–110007 मो. 9810245605
21. **डॉ. विवेक आर्य जी**
    (प्रकाशन एवं पुस्तकालय अध्यक्ष) म.न. 1466ए, सैनी मोहल्ला नजफगढ़, नई दिल्ली–110043 मो. 9310679090
22. **श्री गौरव आर्य पटौदी**
    म.न. 803, सैक्टर–09, गुरुग्राम मो. 9891897035
23. **श्री सुन्दर शास्त्री जी,**
    आर्य समाज ब्रह्मपुरी, भगतसिंह कॉलोनी, न्यू उस्मानपुर, दिल्ली–53, मो. 8130404584
24. **श्री विनय कृष्ण चतुर्वेदी जी,**
    P–12, सैक्टर–11, नोएडा, उ.प्र. मो. 9711296239
25. **श्री सतीश मेहता जी,**
    B–145, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली–110060
26. **श्री अतुल सहगल जी,**
    33B, अर्जुन अपार्टमेन्ट, विकासपुरी, नई दिल्ली–18, मो. 9811466598
27. **आचार्य राजेन्द्र आर्य जी,**
    आर्ष महाविद्यालय गुरुकुल कालवा जिला–जीन्द–126113, हरियाणा मो. 9466013563
28. **श्री गजेन्द्र सिंह जी चौहान**
    म.न. 474, गली नम्बर 19, A–ब्लॉक मोलडबन्द एक्सटेंशन, बदरपुर नई दिल्ली–110049, मो. 9810594417
29. **श्री राहुल गोयल जी (कान्ट्रेक्टर)**
    B–4, फार्म हाउस, डेरा भाटी ट्रोड़, नई दिल्ली–110074, मो. 9999199933

परामर्शदाता–

1. **डॉ. महेश विद्यालंकार जी**
   BJ–29, शालीमार बाग, दिल्ली–110088 मो. 9810305288
2. **आचार्य विद्याप्रसाद मिश्र जी 'धर्माचार्य'**
   आर्य समाज साउथ एक्स. पार्ट–1 नई दिल्ली–110049, मो. 9811281378
3. **आचार्य श्याम देव शास्त्री जी 'धर्माचार्य'**
   आर्य समाज नारायणा विहार नई दिल्ली–110028, मो. 9811064932
4. **आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी 'धर्माचार्य'**
   आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली–110060, मो. 9810884124
5. **स्वामी चक्रपाणि जी, 'अध्यक्ष'**
   अखिल भारत हिन्दू महा सभा मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 मो. 9873278708

शुद्धि समाचार सम्बन्धी घोषणा

फार्म-4 (नियम 8 देखिए)

1. प्रकाशन का स्थान	:	नई दिल्ली
2. प्रकाशन अवधि	:	मासिक
3. मुद्रक का नाम	:	नरेन्द्र मोहन वलेचा
4. क्या भारत का नागरिक है?	:	हाँ
5. मुद्रक का पता	:	भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा भवन, बिरला लाइन, दिल्ली-110007
6. प्रकाशक का नाम	:	नरेन्द्र मोहन वलेचा
7. क्या भारत का नागरिक है?	:	हाँ
8. प्रकाशक का पता	:	भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा भवन, बिरला लाइन, दिल्ली-110007
9. सम्पादक का नाम	:	आचार्य गवेन्द्र शास्त्री
क्या भारत का नागरिक है?	:	हाँ
सम्पादक का पता	:	आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-110060

उन व्यक्यिों के नाम पते जो जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एकप्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।

मैं नरेन्द्र मोहन वलेचा एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये विवरण सत्य हैं।

दिनांक 1.03.2025 **नरेन्द्र मोहन वलेचा,** प्रकाशक

सुविचार- सदैव प्रसन्न रहना सीखिए। जब हम प्रसन्न रहना सीख जाते हैं तब हमारी परेशानियाँ अपने-आप ही मूहँ मोड़कर भाग जाती हैं। परेशानियों की मधुमक्खियां उसी को घेरती हैं जो उनके आगे आत्मसमर्पण कर देते हैं। हमारे जीवन निर्माण में सब कुछ नियति पर नहीं छोड़ा जा सकता है अपितु बहुत कुछ प्रयास हमारे भी होने चाहिए। भावनाओं की पवित्रता, विचारों की शुद्धता, लक्ष्य की श्रेष्ठता और पुरुषार्थ की निरंतरता ही जीवन को महान बनाता है।

(पृष्ठ 1 का शुद्धि उपन्यास धारावाहिक लेख का शेष)

गलती ना हो लेकिन पति को वह बात अच्छी ना लगे तो, उसे तलाक तलाक तलाक कहकर तलाक दे दो। और कृ और निकाह के समय जो मौलवी के द्वारा मेहर बॅधी थी उतने रुपए या सामान देकर उससे हमेशा के लिए छुट्टी पा लो। यदि उसकी अच्छाइयों पर पति की फिर से नजर पड़ जाए और वह उसे अपनाना, उसे दोबारा स्वीकार करना भी चाहे तो हलाला करना पड़ेगा। हलाला चाहे वह ससुर से करें, जेठ से करें, देवर से करें या किसी मौलवी से करें; तो जब घर में ही उसके साथ इतना गलत व्यवहार है उसे केवल खेत समझा जाता है, बच्चे बनाने की मशीन समझा जाता है तो उसे बाहर के लोगों की गलत नजर की क्या आवश्यकता? स्त्री तो उनकी प्रोपर्टी है चाहे जैसे वैसे भोगे। अरे भाई हम तो उस राम की संतान है जिसके सामने सूर्पनखा स्वयं सौंदर्य की प्रतिमा बनकर उपस्थित हुई थी और जिसने विवाह का प्रस्ताव रखा था लेकिन राम ने उसको ठुकरा दिया और लक्ष्मण ने भी जबकि उनकी पत्नी उर्मिला तो उनके साथ भी नहीं थी, उसे ठुकरा दिया और ज्यादा जिद करने पर सीता को डराने धमकाने पर उसके नाक कान लक्ष्मण ने काट लिए। भाई हमारे यहाँ और मुसलमान के यहाँ की महिला की स्थिति में तो जमीन आसमान का अंतर है। हमारी मनुस्मृति में कहा गया है-"यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता। "अर्थात जहॉ पर नारी का सम्मान होता है, उसकी पूजा होती है वहॉ पर देवता निवास करते हैं। तो मुस्लिम धर्म में नारी की क्या स्थिति है और हमारे धर्म में नारी की क्या स्थिति है इसको तुम्हें समझना होगा। मुस्लिम संस्कृति के प्रभाव के कारण ही हमारे देश में नारी की कितनी दुर्दशा हुई है। बाल विवाह, बेमेल विवाह, सती प्रथा, जौहर प्रथा विधवा का तिरस्कार सब उसी की देन थी। और भाई यदि तुम्हें लगता है कि हमारे धर्म और संस्कृति में कुछ विकार हैं तो उन्हें दूर करने का प्रयास करो क्योंकि यदि अपनी मॉ बीमार हो जाए तो क्या उसे छोड़कर भागने में हमारी भलाई है? नहीं। हमें उसकी बीमारी को दूर करके उसे स्वस्थ करना होगा। 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।' जोश में अखिल लगातार बिना रुके बोले जा रहा था।

" हिन्दू औरतों के लिबास के बारे में तू कुछ नहीं बोलेगा?"

औरतों के कपड़ों के बारे में तेरे विचार सही है। मैं भी औरतों के छोटे कपड़े, अश्लील पहनावे के बारे में बिल्कुल भी सहमत नहीं हूं क्योंकि कपड़े शरीर ढकने के लिए होते हैं। सुंदरता बढ़ाना सबका अपना अधिकार है लेकिन सुंदरता बढ़ाने के लिए या सुंदर दिखने के लिए छोटे कपड़े पहनने की कोई आवश्यकता नहीं है लेकिन कपड़ों से केवल चरित्र का आंकलन नहीं किया जा सकता। चरित्र विचारों में, आचरण में होता है। पहले जमाने में जब केवल लहंगा चोली पहनी जाती थी। कपड़े कम थे लेकिन चरित्र उच्च कोटि का था। आज बारह मीटर के कपड़े पहनकर भी चरित्र अगर सही नहीं है तो उसको हम सही नहीं ठहरा सकते इसलिए यहॉ पर जो आज बहन बेटियां छोटे कपड़े या अश्लील कपड़े पहनती हैं उनको समझना होगा न कि उनके कारण हमें पूरे समाज की बहन बेटियों के ऊपर कुदृष्टि रखकर उनकी आलोचना करनी होगी या उनके साथ गलत व्यवहार और गलत आचरण करना होगा बल्कि बहके हुए, बिगड़े हुए लोगों को सुधारना हमारा कर्तव्य है। सोते हुए लोगों को जगाना हमारी प्राथमिक नैतिकता है। हर काल में, हर समाज में, और हर देश में दो प्रकार के व्यक्ति हर समय विद्यमान रहे हैं गलत भी और अच्छे भी। निर्भरता इस पर है कि अच्छे लोगों का प्रतिशत कितना है और गलत लोगों का प्रतिशत कितना है। अगर अच्छे लोगों का प्रतिशत बहुत ज्यादा है तो अच्छाई ही सर्वोपरि होती है वह अनैतिकता को अपने सिर पर नहीं चढ़ने देती लेकिन यदि गलत लोगों का प्रतिशत ज्यादा बढ़ जाता है तो अच्छाई दब जाती है और बुराई उस पर हावी हो जाती है तो हमें अपने सीमित प्रयासों से, संसाधनों से, तन मन से सामर्थ्यानुसार उस गलत प्रवृत्ति को अच्छी प्रवृत्ति पर हावी होने से रोकना है। उससे भागना कोई उपाय नहीं है। यदि अपने धर्म में, संस्कृति में और समाज में दोष आ भी गये है तो डटकर उसका मुकाबला करो न कि भाग कर अन्य किसी धर्म को अपना लो। भाई अपने धर्म का अध्ययन करो। अपनी वैदिक संस्कृति का, गौरव गरिमा का अध्ययन करो। वेद हमारा धार्मिक ग्रंथ हैं। अपनी धार्मिक विरासत के कारण हमारा देश जगत गुरु के स्थान पर विराजमान था। हमारा देश आर्थिक रूप से सोने की चिड़िया था। हमारी संस्कृति सर्वश्रेष्ठ और महान है। हमारे धार्मिक संविधान जो वेद के नाम से जाना जाते हैं वे सबसे ज्यादा प्राचीन हैं। जिस समय लिखने की कला भी अस्तित्व में नहीं आई थी उस समय से वेद एक दूसरे को सुना कर धरोहर के रूप में संजोए गए हैं।

(शेष अगले अंक में)

शुद्धि कार्य में आर्थिक सहयोग हेतु

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा को दी गई राशि पर 80 G के अंतर्गत आयकर छूट उपलब्ध है

खाता संख्या- 0154000100352511,
पंजाब नेशनल बैंक,
शाखा कमला नगर, दिल्ली-07,
IFSC-PUNB0015400 पर
सीधे जमा करवा सकते हैं,
तत्पश्चात् फोन न. 8368008215
पर सूचित करें ताकि आपको
रसीद भेजी जा सके।

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा
BHARTIYA HINDU SHUDHI SABHA

इंसान ने वक्त से पूछा

इंसान ने वक्त से पूछा
"मै हार क्यूं जाता हूँ ?"
वक्त ने कहा..
धूप हो या छाँव हो,
काली रात हो या बरसात हो,
चाहे कितने भी बुरे हालात हो,
मै हर वक्त चलता रहता हूँ,
इसीलिये मैं जीत जाता हूँ,
तू भी मेरे साथ चल,
कभी नहीं हारेगा।

ऋषि बोधोत्सव पर

कुछ सोचो, कुछ करने का संकल्प लो

आर्यो ! उठो, जागो, श्रेष्ठ गुणों को धारण करके स्वयं ज्ञानी बनकर पाखण्ड व अज्ञान का विनाश करके संसार को आर्य बनाने का संकल्प धारण करो। दयानन्द के दिव्य स्वप्न को पूरा करने के लिए कटिबद्ध हो जाओ। सफलता हमारा वरण करने को तैयार बैठी है। इसको पाने के लिये वर्तमान तथाकथित नेताओं के मुख मत देखो। ये न स्वयं कुछ करेंगे और न किसी को आगे आने देंगे। यदि हमने इस समय अपने कर्त्तव्य को पहचान लिया और उसे पूरा करने के लिये कटिबद्ध हो गये, तो ठीक है; अन्यथा हमारा भविष्य में पूर्ण महाविनाश संभव है।

आचार्य श्याम
9811064932, 9555534381

माह फरवरी 2025 के आर्थिक सहयोगी-

1.	श्रीमती सुमेश गुप्ता जी नवरत्न अपार्टमेन्ट, सैक्टर-23, द्वारिका द्वारा अपने पूज्य पति स्व. श्री राजेश कुमार गुप्ता जी की पुण्य स्मृति में दान	20000/-
2.	आर्य रजनीश जी, पालम विहार, गुड़गांव, हरियाणा	5100/-
3.	श्री आर्य नरेन्द्र जी, सैक्टर-24, रोहिणी, दिल्ली-85	2000/-
4.	श्री सागर श्रीवास्तव जी, रोहिणी सैक्टर-21, दिल्ली-85	1000/-
5.	श्रीमती अनीता शास्त्री जी, आर्य समाज मोहन गार्डन, उत्तम नगर, नई दिल्ली	500/-
6.	श्री विजय कालरा जी, फ्रेंड्स अपार्टमेन्ट, सैक्टर-9, रोहिणी, दिल्ली	500/-
7.	श्री संजीव एहलावत जी, पानीपत, हरियाणा	501/-

श्री सुभाषचन्द्र दुआ जी की प्रेरणा से प्राप्त दान राशि-

1.	श्री निर्मल झुनझुनवाला जी यू.एस.ए. (अमेरिका)	5000/-मासिक
2.	श्री नवाज सेलिमेन्ट जी अमेरिका	3700/- मासिक
3.	श्री नागेश कुमार मित्तल जी गाजीपुर रोड, जिरकपुर मोहाली पंजाब	2000/- मासिक
4.	श्री विजय कपूर जी, कैलाश कॉलोनी, नई दिल्ली	1100/- मासिक
5.	श्री सोनू आर्य हरसौला, कैथल, हरियाणा	1100/-मासिक
6.	श्रीमती स्वाति गुप्ता जी बैंगलुरु, कर्नाटक	500/- मासिक

श्री वेद प्रकाश जी (द्वारिका नई दिल्ली) के द्वारा एकत्रित दान-

1.	श्री राहुल भड़ाना जी, नई दिल्ली	2100/-
2.	श्री के.एम. गोयल जी, कालका जी एक्स., नई दिल्ली	2100/-
3.	श्री लक्ष्मण सिंह जी, श्री सुरेश सिंह, जीवन पार्क, नई दिल्ली	1000/-
4.	श्री संजय जी, 216, प्लॉट नम्बर 3, सैक्टर-10, द्वारिका, नई दिल्ली	1000/-
5.	श्री भंवर सिंह जी, रघुनगर, नई दिल्ली-45	1100/-
6.	श्री धर्मपाल सिंह रावत जी, शाकुन्तलम्, सैक्टर-10, द्वारिका, नई दिल्ली	1000/-
7.	श्री रणवीर सिंह जी, महावीर एन्क्लेव, पार्ट-3, नई दिल्ली	1100/-
8.	श्री सन्नी चौधरी जी, श्री धर्मेन्द्र तोमर जी, ग्रेटर नोएडा (वेस्ट), उ.प्र.	1100/-
9.	श्री दिनेश कुमार त्यागी जी, सैक्टर-11, वसुन्धरा, गाजियाबाद	1100/-
10.	श्री यशपाल सिंह जी, सैक्टर-19, द्वारिका, नई दिल्ली-110017	1000/-
11.	श्री अर्जुन प्रसाद साहा जी, सैक्टर-जेटा-1, ग्रेटर नोएडा, उ.प्र.	500/-
12.	श्री अशोक कुमार जी, चन्द्र रोड., देहरादून	500/-
13.	श्री राहुल गिरि जी, ग्राम-पो. तेड़ा, जिला-बागपत, उ.प्र.	500/-
14.	श्री कृष्ण कुमार जी, वसन्त कुंज, नई दिल्ली	500/-
15.	श्री विजय कुमार गुप्ता जी, सैक्टर-10, द्वारिका, नई दिल्ली	500/-
16.	श्री एस.के. खत्री जी, सरिता विहार, नई दिल्ली	500/-
17.	श्री बी.के. सन्धील जी, एच-3, विकासपुरी, नई दिल्ली	501/-
18.	श्री राममोहन गुप्ता जी, प्लाटिनक सोसाइटी, ग्रेटर नोएडा	500/-

शुभ सूचना

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के अन्तर्गत प्रकाशित पुस्तकें:-

1.	शताब्दी स्मारिका	-	500/- रूपये
2.	आर्य समाज और शुद्धि आन्दोलन	-	500/- रूपये
3.	Arya Samaj & Shuddi Movement	-	300/- रूपये
4.	हिन्दू संगठन (स्वामी श्रद्धानन्द) अंग्रेजी संस्करण	-	100/- रूपये
5.	मैंने ईसाई मत क्यो छोड़ा-आर्यवीर अरूण	-	50/- रूपये
6.	वेदों को जाने	-	300/- रूपये
7.	सनातन को जानें	-	150/- रूपये
8.	मनुस्मृति को जाने	-	120/- रूपये
9.	श्री वाल्मीकि प्रकाश	-	50/- रूपये
10.	Why I Left Christianity	-	75/- रूपये
11.	ऋषि दयानन्द को जानें-	-	70/- रूपये
12.	धर्म बलिदानियों को जाने-	-	80/- रूपये

नोट:- आप यह पुस्तकें 10 प्रतिशत की छूट पर प्राप्त कर सकते है।

R.N.I.No. 43084/76
Date of Publication 01-03-2025

Delhi Postal R.No. DL (N) 385/2024-26
Posting Date: 2-3 Every Month

सेवा में,

शुद्धि समाचार

मार्च 2025

23 मार्चः भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव शहीद दिवस

भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव भारत के वे सच्चे सपूत थे, जिन्होंने अपनी देशभक्ति और देशप्रेम को अपने प्राणों से भी अधिक महत्व दिया और मातृभूमि के लिए प्राण न्यौछावर कर गए। 23 मार्च यानि, देश के लिए लड़ते हुए अपने प्राणों को हंसते–हंसते न्यौछावर करने वाले तीन वीर सपूतों का शहीद दिवस। यह दिवस न केवल देश के प्रति सम्मान और हिंदुस्तानी होने व गौरव का अनुभव कराता है, बल्कि वीर सपूतों के बलिदान को भीगे मन से श्रृद्धांजलि देता है। उन अमर क्रांतिकारियों के बारे में आम मनुष्य की वैचारिक टिप्पणी का कोई अर्थ नहीं है। उनके उज्ज्वल चरित्राों को बस याद किया जा सकता है कि ऐसे मानव भी इस दुनिया में हुए हैं, जिनके आचरण किंवदंति हैं। भगतसिंह ने अपने अति संक्षिप्त जीवन में वैचारिक क्रांति की जो मशाल जलाई, उनके बाद अब किसी के लिए संभव न होगी। आदमी को मारा जा सकता है उसके विचार को नहीं। बड़े साम्राज्यों का पतन हो जाता है लेकिन विचार हमेशा जीवित रहते हैं और बहरे हो चुके लोगों को सुनाने के लिए ऊंची आवाज जरूरी है। बम पफेंकने के बाद भगतसिंह द्वारा पफेंके गए पर्चों में यह लिखा था। भगतसिंह चाहते थे कि इसमें कोई खून–खराबा न हो तथा अंग्रेजों तक उनकी आवाज पहुंचे। निर्धारित योजना के अनुसार भगतसिंह तथा बटुकेश्वर दत्त ने 8 अप्रैल 1929 को केंद्रीय असेम्बली में एक खाली स्थान पर बम पफेंका था। इसके बाद उन्होंने स्वयं गिरफ़्तारी देकर अपना संदेश दुनिया के सामने रखा। उनकी गिरफ़्तारी के बाद उन पर एक ब्रिटिश पुलिस अधिकारी जेपी साण्डर्स की हत्या में भी शामिल होने के कारण देशद्रोह और हत्या का मुकदमा चला। यह मुकदमा भारतीय स्वतंत्राता के इतिहास में लाहौर षडयंत्र के नाम से जाना जाता है। करीब 2 साल जेल प्रवास के दौरान भी भगतसिंह क्रांतिकारी गतिविधियों से भी जुड़े रहे और लेखन व अध्ययन भी जारी रखा। पफांसी पर जाने से पहले तक भी वे लेनिन की जीवनी पढ़ रहे थे। भगतसिंह का जन्म 28 सितंबर 1907 को हुआ था और 23 मार्च 1931 को शाम 7.23 पर भगत सिंह, सुखदेव तथा राजगुरु को पफांसी दे दी गई।

शहीद सुखदेवः सुखदेव का जन्म 15 मई, 1907 को पंजाब को लायलपुर पाकिस्तान में हुआ। भगतसिंह और सुखदेव के परिवार लायलपुर में पास–पास ही रहने से इन दोनों वीरों में गहरी दोस्ती थी, साथ ही दोनों लाहौर नेशनल कॉलेज के छात्रा थे। सांडर्स हत्याकांड में इन्होंने भगतसिंह तथा राजगुरु का साथ दिया था।

शहीद राजगुरुः 24 अगस्त, 1908 को पुणे जिले के खेड़ा में राजगुरु का जन्म हुआ। शिवाजी की छापामार शैली के प्रशंसक राजगुरु लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के विचारों से भी प्रभावित थे। पुलिस की बर्बर पिटाई से लाला लाजपत राय की मौत का बदला लेने के लिए राजगुरु ने 19 दिसंबर, 1928 को भगत सिंह के साथ मिलकर लाहौर में अंग्रेज सहायक पुलिस अधीक्षक जेपी सांडर्स को गोली मार दी थी और खुद ही गिरफ़्तार हो गए थे।

लखनऊ में दो मुस्लिम युवकों ने अपनाया सनातन धर्म

शिया सेन्ट्रल वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष रहे वसीम रिजवी उर्फ जितेन्द्र नारायण सेंगर ने शनिवार को मनकामेश्वर मन्दिर मे दो मुसलमान युवकों का धर्म परिवर्तन कराया। धर्म परिवर्तन के बाद सरफराज अहमद राजन मिश्रा बने और गुलनाज विराट शर्मा में बदल गये। इस मौके पर मनकामेश्वर मन्दिर की महंत देव्या गिरि भी मौजूद रहीं। धर्म परिवर्तन करने वाले दोनों युवकों को 11–11 हजार रूपये की प्रोत्साहन राशि दी गई। जितेन्द्र नारायण सेंगर के मुताबिक अब दोनों युवकों को 3 हजार रूपये महीने की सहायता राशि तब तक दी जाएगी जब तक कि यह लोग अपने नये धर्म में सेट नहीं हो जाते।

सुविचार– सूर्य कहता है, मेरी तरह जागो। आकाश कहता है मेरी तरह लक्ष्य ऊँचा रखो। हवा कहती हैं मेरी तरह सबको तरो ताजा रखो। क्योंकि नाकारात्मक परिवेश में भी सकारात्मक सोच ही हमें सफल होने की राह दिखाती है।

खुद हिन्दू बने वसीम रिजवी ने महाकुंभ में किया ऐलान

मुसलमान से सनातनी बनने पर मिलेगा 3000 महीना

धर्म परिवर्तन कर वसीम रिजवी से जितेन्द्र नारायण त्यागी बने पूर्व शिया वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष ने अब मुसलमानों से घर वापसी करने की खुली अपील कर दी है। यही नहीं, उन्होंने धर्म परिवर्तन करने वाले मुसलमानों को हर महीने 300 रूपये देने का ऐलान भी किया है। उन्होंने मंगलवार को महाकुंभ पहुंचकर संगम स्नान भी किया। उन्होंने कहा कि इस्लाम से सनातन धर्म अपनाने वालों को 3000 रूपए महीना देने के साथ ही उन्हें कारोबार दिलाने में भी मदद की जाएगी।

उन्होंने कहा कि आपको कट्टरपंथी और जेहादी मानसिकता से बाहर निकलना पड़ेगा। अपनी खुशी से सनातन धर्म में घर वापसी कीजिए। सनातन धर्म आपका स्वागत करता है। उत्तर प्रदेश शिया वक्फ बोर्ड के पूर्व चेयरमैन वसीम रिजवी ने 3 साल पहले इस्लाम छोड़कर सनातन धर्म अपना लिया था। धर्म बदलने के बाद उन्होंने अपना नाम भी वसीम रिजवी से जितेन्द्र नारायण सिंह त्यागी रख लिया था।

मुद्रक व प्रकाशक–नरेन्द्र मोहन वलेचा द्वारा मयंक प्रिन्टर्स–2199/63, नाईवाला करोल बाग, नई दिल्ली–110005, से मुद्रित एवं भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, 6949, बिड़ला लाइन दिल्ली–7, मो.: 8368008215, 9718550459 से प्रकाशित। सम्पादकः आचार्य गवेन्द्र शास्त्री